Quick word tests

तरक्क़ी	तरक़्क़ी	आह्लाद	आह्नाद	फ्रीज	फ्रीज	मग्ज	मग्ज	हृत्स्थल	हत्स्थल	सिर्फ	सिर्फ
ज़्यादा	ज़्यादा	ब्राह्मण	ब्राह्मण	ह्रितिक	ह्रितिक	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान	ज्योत्स्रा	ज्योत्स्ना	व्हिस्की	व्हिस्की
मन्ज़ूर	मन्जूर	मिस्त्री	मिस्त्री	एल्ज़े	एल्जे	दिग्दर्शन	दिग्दर्शन	ईषत्स्पृष्ट्	ईषत्स्पृष्ट्	इश्क	इश्क
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान	दुष्प्रह्य	दुष्प्रह्य	उत्त्य	उत्त्य	पंक्ति	पंक्ति	उत्स्रुत	उत्सुत	प्रश्न	प्रश्न
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार	अद्भुत	अद्भुत	उत्य	उत्य	मंगलवार	मंगलवार	सद्गति	सद्गति	रुश्द	रुश्द
छुट्टी	छुट्टी	इल्ज़ाम	इल्जाम	रत	रत्न	दुर्लंघ्य	दुर्लंघ्य	सद्गन्थ	सद्ग्रन्थ	वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अक्षरे	अक्षरे	सज़्स	सज़्स	पच्चीस	पच्चीस	उद्घाटन	उद्घाटन	ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	ज्ञान	ज्ञान	एज्जा	एज्जा	अच्छा	अच्छा	ज़िद्दी	ज़िद्दी	मिस्त्री	मिस्त्री
दर्ष्टांत	दर्शत	मौके	मौके	ब्यर्थे	ब्यर्थै	उज्र	उज़	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	आह्वान	आह्वान
चिट्ठी	चिट्ठी	कैंटोमेंट	कैंटोमेंट	तरक़्क़ी	तरक़्क़ी	संस्कृत	संस्कृत	उद्बोध	उद्बोध	आह्लाद	आह्नाद
वाङ्मय	वाङ्मय	छूट कुछ	छूट कुछ	फ्रैक्चर	फ्रैक्चर	हिंस्र	हिंस्र	द्रव	द्रव	ह्रास	ह्रास
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य	करेंट	करेंट	डॉक्टर	डॉक्टर	छुट्टी	छुट्टी	दारिद्य	दारिद्र्य	अंकुड़ा	अंकुड़ा
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना	राष्ट्रून	राष्ट्रन	इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन	चिट्ठी	चिट्ठी	अध्रुव	अध्रुव	अंतर्निहित	अंतर्निहित
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	कॉफी	कॉफी	रक्त	रक्त	विशाखपट्नम	विशाखपट्नम	मंज़ूर	मंज़ूर	अन्तः	अन्तः
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	हिंदू-मुस्लिम	। हिंदू-मुस्लिम	वक्त	वक्त्र	ट्रैन	ट्रैन	मंत्री	मंत्री	अंतर्वेशन	अंतर्वेशन
सान्ध्य	सान्ध्य	करणाऱ्या	करणाऱ्या	युक्त्यभास	युक्त्यभास	सुपाठ्य	सुपाठ्य	स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य	अग्नि	अग्नि
इज़ात	इज़्जत	स्रेह	स्नेह	वक्फ़	वक्फ़	लड्डू	लडू	द्वंद्व	दंद	अद्भुत	अद्भुत
उज्ज्वल	उज्ज्वल	श्री	श्री	शुक्ल	शुक्ल	ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य	उन्नीस	उन्नीस	छुछुंदर	छुछुंदर
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा	स्त्री	स्त्री	रिक्शा	रिक्शा	उत्क्रम	उत्क्रम	इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट	हुंकार	हुंकार
इकत्तीस	इकत्तीस	ध्ड्यां	ध्ह्यां	पक्ष	पक्ष	उत्क्षेप	उत्क्षेप	उन्हें	उन्हें	हित इच्छुक	हित इच्छुक
सत्रह	सत्रह	शक्ति	शक्ति	लक्ष्मी	लक्ष्मी	विद्युत्प्रहक	विद्युत्प्रहक	दीन्ह्यो	दीन्ह्यो	कुर्री	कुर्री
पद्म	पद्म	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अभक्ष्य	अभक्ष्य	महत्त्व	महत्त्व	नैप्स्यून	नैप्स्यून	कुल्हिया	कुल्हिया
विद्यार्थी	विद्यार्थी	कट्टू	कटू	दिक्स्थापन	दिक्स्थापन	पत्थर	पत्थर	प्राप्त	प्राप्त		
उन्नीस	उन्नीस	रूप	रूप	सख़्त	सख़्त	विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी	सब्ज़ी	सब्जी		
पश्चिम	पश्चिम	हूं	अप्र ं	अख्त्यार	अख्त्यार	पत्नी	पत्नी	छब्बीस	छब्बीस		
श्रीलंका	श्रीलंका	बुत्तो	बुत्तो	ज़ख़्म	ज़ख़	सपल्य	सपत्न्य	मार्किट	मार्किट		
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय	बार्गी	बार्गी	ख्रिष्टां	ख्रिष्टां	उत्प्रवास	उत्प्रवास	दुर्ज्ञेय	दुर्ज्ञेय		
स्नान	स्नान	कुंग	कुंग	फ़रव्र	फ़ख़	त्र्याहिक	त्र्याहिक	उर्दू	उर्दू		
बुद्ध	बुद्ध	ह्रूप	हूप	अग्ग्रास	अग्ग्रास	विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति	निर्द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व		

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्रवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धित होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्भवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ ॥ अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यृह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की याता करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई याताएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धित होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्तों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स।

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दुष्कर्म सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शल्क बढा, नहीं बढेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date:Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date:Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मुविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू 1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंटास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीड़ी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीड़ी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्य1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्य्1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यु 1 दुनिया का पहला वाटरप्रुफ और शॉकप्रुफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मुविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंटास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रांड फैशन इंवेट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट।।

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान।।

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालों को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी निदयों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करैं। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी निदयों में रेत और फूल फिलयाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करैं। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी किए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परवत कर दिखाऊँ और झठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं।।

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हिरयाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वहीं झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहत सी नाँह-नूह की और कहा - मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फुल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वहीं झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहत सी नाँह-नृह की और कहा -

Consonant spacing	पपसपवपवसवव	Rakar spacing	पपह्रपवपवह्रवव	पपद्वपवपवद्ववव
पपकपवपवकवव	पपहपवपवहवव	11114114114444	पपळ्रपवपवळ्रवव	पपद्भपवपवद्भवव
पपखपवपवखवव	पपक्रपवपवक्रवव	पपक्रपवपवक्रवव	पपक्षपवपवक्षवव	पपद्वपवपवद्ववव
पपगपवपवगवव	पपख़पवपवख़वव	पपख्रपवपवख्रवव पपग्रपवपवग्रवव	पपञ्चपवपवञ्चवव	पपद्धपवपवद्धवव
पपघपवपवघवव	पपग़पवपवग़वव	पपघ्रपवपवघ्रवव		पपद्मपवपवद्मवव
पपङ्पवपवङ्चव	पपज्ञपवपवज्ञवव		Conjunct spacing	पपद्मपवपवद्मवव
पपचपवपवचवव	पपड़पवपवड़वव	पपङ्गपवपवङ्गवव पपञ्चपवपवञ्चवव	पपक्तपवपवक्तवव	पपद्यपवपवद्यवव
पपछपवपवछवव	पपढ़पवपवढ़वव	पपछ्पवपवछ्रवव	पपङ्गपवपवङ्गवव	पपद्पवपवद्दवव
पपजपवपवजवव	पपफ़पवपवफ़वव	पपज्रपवपवज्रवव	पपङ्गपवपवङ्गवव	पपन्भपवपवन्भवव
पपझपवपवझवव	पपयपवपवयवव	पपझपवपवझवव	पपड्यपवपवड्यवव	पपन्मपवपवन्मवव
पपञपवपवञ्चव	पपक्षपवपवक्षवव	पपञ्जपवपवञ्जवव	पपज्जपवपवज्जवव	पपल्जपवपवल्जवव
पपटपवपवटवव	पपज्ञपवपवज्ञवव	पपट्रपवपवट्रवव	पपञ्थपवपवज्थवव	पपल्थपवपवल्थवव
पपठपवपवठवव		पपठ्रपवपवठ्रवव	पपज्यपवपवज्यवव	पपल्भपवपवल्भवव
पपडपवपवडवव	Vowel spacing	पपड्रपवपवड्रवव	पपज्सपवपवज्सवव	पपल्मपवपवल्मवव
पपढपवपवढवव	पपअपवपवअवव	पपद्रपवपवद्रवव	पपछ्यपवपवछ्यवव	पपल्यपवपवल्यवव
पपणपवपवणवव	पपअपवपवअवव	पपण्णपवपवण्णवव	पपट्यपवपवट्यवव	पपश्रपवपवश्रवव
पपतपवपवतवव	पपॲपवपवॲवव	पपत्रपवपवत्रवव	पपठ्यपवपवठ्यवव	पपश्वपवपवश्ववव
पपथपवपवथवव	पपइपवपवइवव	पपथ्रपवपवथ्रवव	पपड्यपवपवड्यवव	पपश्लपवपवश्लवव
पपदपवपवदवव	पपईपवपवईवव	पपद्रपवपवद्रवव	पपढ्यपवपवढ्यवव	पपष्टपवपवष्टवव
पपधपवपवधवव	पपउपवपवउवव	पपध्रपवपवध्रवव	पपट्टपवपवट्टवव	पपष्ट्रपवपवष्ट्रवव
पपनपवपवनवव	पपऊपवपवऊवव	पपत्रपवपवत्रवव	पपद्रपवपवद्गवव	पपष्ठपवपवष्ठवव
पपपपवपवपवव	पपएपवपवएवव	पपप्रपवपवप्रवव	पपठ्ठपवपवठ्ठवव	पपष्ठपवपवष्ठवव
पपफपवपवफवव	पपऐपवपवऐवव	पपफ्रपवपवफ्रवव	पपहृपवपवहृवव	पपह्नपवपवह्नवव
पपबपवपवबवव	पपऍपवपवऍवव	पपत्रपवपवत्रवव	पपडुँपवपवडुँवव	पपह्नपवपवह्नवव
पपभपवपवभवव	पपऎपवपवऎवव	पपभ्रपवपवभ्रवव	पपढ्ढपवपवढ्ढवव	पपह्मपवपवह्मवव
पपमपवपवमवव	पपआपवपवआवव	पपम्रपवपवम्रवव	पपत्तपवपवत्तवव	पपह्यपवपवह्यवव
पपयपवपवयवव	पपओपवपवओवव	पपग्रपवपवग्रवव	पपत्खपवपवत्खवव	पपह्नपवपवह्नवव
पपरपवपवरवव	पपऔपवपवऔवव	पपरूपवपवरूवव	पपत्थपवपवत्थवव	पपह्नपवपवह्नवव
पपलपवपवलवव	पपऋपवपवऋवव	पपल्रपवपवल्लवव	पपत्नपवपवत्नवव	
पपळपवपवळवव	पपऋपवपवऋवव	पपत्रपवपवत्रवव	पपत्सपवपवत्सवव	
पपवपवपवववव	पपलपवपवलवव	पपश्रपवपवश्रवव	पपत्यपवपवत्यवव	
पपशपवपवशवव	पपॡपवपवॡवव	पपष्रपवपवष्रवव	पपद्धपवपवद्धवव	
पपषपवपवषवव		पपस्रपवपवस्रवव	पपद्गपवपवद्गवव	

U/Uu variant spacing पपहुपवपवहुवव पपहूपवपवहूवव पपहुपवपवहूवव पपहुपवपवहूवव पपहुपवपवहूवव पपहुपवपवहूवव पपहूपवपवहूवव पपरूपवपवहूवव पपरूपवपवरूवव पपरूपवपवदुवव पपदुपवपवदुवव पपदूपवपवदुवव पपदूपवपवदुवव पपदूपवपवदुवव पपपदुपवपवदुवव पपपद्पवपवद्वव पपपद्पवपवद्वव पपपद्पवपवर्वव पपपद्पवपवर्वव पपप्पप्पप्पप्कंपप पपप्पप्प्प्पकंपप	पपपॉपपरॉपपकॉपप पपपॉपपरॉपपकॉपप पपपॉपपरॉपपकॉपप पपपॉपपरॉपपकॉपप पपपॉपपरॉपपकॉपप पपपोपपरोपपकोपप पपपोपपरोपपकोपप पपपोपपरॉपपकॉपप पपपोपपरॉपपकॉपप पपपोपपरॉपपकॉपप पपपोपपरॉपपकॉपप पपपोपपरॉपपकॉपप पपपोपपरॉपपकॉपप पपपोपपर्गपकीपप पपपुपपरूपपकुपप पपपूपपरूपपकृपप पपपूपपरूपपकुपप पपपूपपरूपपकुपप पपपूपपरूपपकुपप पपपूपपरूपपकुपप	Numeral spacing ००००१०१०११ ००१०१०१११ ००२०१०१२११ ००३०१०१३११ ००४०१०१४११ ००६०१०१६११ ००८०१०१८११ ००९०१०१९११ Letter-punct spacing पपक, पवक. पपग, पवग. पपम, पवम. पपम, पवम. पपम, पवम.	पपन, पवन. पपप, पवप. पपफ, पवफ. पपक, पवब. पपभ, पवभ. पपम, पवम. पपम, पवय. पपर, पवर. पपल, पवल. पपळ, पवल. पपळ, पवल. पपक, पवक. पपभ, पवश. पपभ, पवश. पपभ, पवश. पपम, पवम. पपम, पवा. पपम, पवा. पपम, पवा. पपम, पवा. पपम, पवा. पपम, पवा. पपस, पवा.	पपए, पवए. पपऐ, पवऐ. पपऍ, पवऍ. पपऍ, पवऍ. पपओ, पवआ. पपओ, पवओ. पपऔ, पवऔ. पपऔ, पवऋ. पपऋ, पवऋ. पपऋ, पवॡ. पपल्, पवॡ. पपछ्, पवछ. पपछ्, पवट्र. पपठ्र, पवठ्र. पपठ्र, पवठ्र. पपछ्र, पवठ्र. पपछ्र, पवठ्र. पपछ्र, पवठ्र. पपछ्र, पवठ्र.	पपद्ग, पवद्ग. पपद्ध, पवद्ध. पपद्ध, पवद्ध. पपद्ध, पवद्ध. पपद्ध, पवद्ध. पपद्ध, पवह. पपष्ट, पवष्ट. पपष्ट, पवष्ट. पपष्ट, पवष्ट. पपष्ठ, पवष्ठ. पपह्ल, पवह्ल.
पपपेपपरेपपकेपप पपपेंपपरेंपपकेंपप पपपोंपपरांपपकापप पपपांपपरांपपकापप पपपींपपरींपपकींपप पपपींपपरींपपकींपप पपपींपपरींपपकींपप	पपर्पपपर्रपपर्कपप पपर्पपपर्रपपर्कपप पपर्पपपर्रपपर्कपप पपर्पपपर्रपपर्कपप पपर्पपपर्रपपर्कपप पपर्पपपर्रपपर्कपप पपर्पपपर्रपपर्कपप पपर्पपपर्रपपर्कपप पपर्पपपर्रपपर्कपप पपर्पपपर्रपपर्कपप पपर्पपपर्रपपर्कपप पपर्पपपर्रपपर्कपप पपप्रपवपववऽवव पपरपवपववःवव पपरपवपववःवव	पपङ, पवङ. पपच, पवच. पपछ, पवछ. पपज, पवज. पपझ, पवझ. पपञ, पवञ. पपट, पवट. पपठ, पवठ. पपढ, पवढ. पपढ, पवढ. पपण, पवण. पपत, पवत. पपथ, पवथ. पपध, पवध. पपध, पवध.	पपज, पवज़. पपड़, पवड़. पपढ़, पवढ़. पपफ़, पवफ़. पपअ, पवश्च. पपअ, पवश्च. पपअ, पवअ. पपअ, पवअ. पपअ, पवअ. पपअ, पवअ. पपइ, पवइ. पपइ, पवई. पपउ, पवउ.	पपद्र, पवद्र. पपद्र, पवर्र. पपह्र, पवह. पपळ्र, पवळ्र. पपक्त, पवक्त. पपक्त, पवङ्ग. पपङ्ग, पवङ्ग. पपट्ट, पवट्ट. पपट्ठ, पवट्ट.	पपह्न, पवह्न. पपह्न, पवह्न. पपह्न, पवह्न. पपरु, पवरु. पपद्ग, पवदु. पपद्ग, पवदू. पपद्ग, पवद्ग पपक; पवकः पपख; पवकः पपण्य; पवकः पपण्य; पवणः पपणः; पवणः पपणः; पवणः

पपचः; पवचः	पपड़; पवड़:	पपर्; पवर्:	पपहु; पवहु:	पपम। पवमः	पपओ। पवओः	पपद्द। पवद्दः
पपछ; पवछ:	पपढ़; पवढ़:	पपह्न; पवह्न:	पपहूँ; पवहूँ:	पपय। पवयः	पपऔ। पवऔः	पपष्ट। पवष्टः
पपजः; पवजः	पपफ़; पवफ़:	पपळू; पवळू:	पपरुः; पवरुः:	पपर। पवरः	पपऋ। पवऋः	पपष्ट्र। पवष्ट्रः
पपझ; पवझ:	पपयः; पवयः:		पपरू; पवरू:	पपल। पवलः	पपऋ। पवऋः	पपष्ठ। पवष्ठः
पपञः; पवञः	पपक्ष; पवक्ष:	पपक्तः; पवक्तः	पपदुः, पवदुः	पपळ। पवळः	पपलृ। पवलः	पपष्ठ्र। पवष्ठः
पपट; पवट:	पपज्ञ; पवज्ञ:	पपङ्गः; पवङ्गः:	पपदूं: पवदूं:	पपव। पववः	पपॡ। पवॡः	पपह्न। पवह्नः
पपठ; पवठ:		पपङ्ग; पवङ्ग:	पपर्वृ; पवर्वृ:	पपश। पवशः		पपह्न। पवहः
पपड; पवड:	पपअ; पवअ:	पपट्टः, पवट्टः		पपष। पवषः	mrz maz.	पपह्न। पवह्नः
पपढः; पवढः	पपऄ; पवऄ:	पपट्ठः, पवट्ठः	-	पपस। पवसः	पपङ्ग। पवङ्ग	पपह्न। पवह्नः
पपणः; पवणः	पपॲ; पवॲ:	पपठ्ठ; पवठ्ठ:	पपक। पवकः	पपह। पवहः	पपछ्। पवछः	
पपतः; पवतः	पपइ; पवइ:	पपड्ढः; पवड्ढः	पपख। पवखः	पपक़ पवक़ः	पपट्र। पवट्रः	पपहु। पवहुः
पपथ; पवथ:	पपई; पवई:	पपड्डु; पवड्डु:	पपग। पवगः	पपख़ पवख़ः	पपठ्र। पवठः	पपहू। पवहूः
पपदः, पवदः	पपउ; पवउ:	पपढ्ढः, पवढ्ढः	पपघ। पवघः	पपग्र। पवगः	पपड्र पवड्रः	पपह्र। पवहः
पपधः; पवधः	पपऊ; पवऊ:	पपद्धः; पवद्धः	पपङ। पवङः	पपज़। पवज़ः	पपद्र पवद्रः	पपहॄ। पवहॄः
पपनः; पवनः	पपए; पवए:	पपद्गः, पवद्गः	पपच। पवचः	पपड़। पवड़ः	पपद्र। पवद्रः	पपह्रु। पवहुः
पपप; पवप:	पपऐ; पवऐ:	पपद्धः, पवद्धः	पपछ। पवछः	पपढ़। पवढ़ः	पपर्। पवरः	पपहू। पवहूः
पपफ; पवफ:	पपऍ; पवऍ:	पपद्भः; पवद्भः	पपज। पवजः	पपफ़। पवफ़ः	पपह्न। पवहः	पपरु। पवरुः
पपबः; पवबः	पपऎ; पवऎ:	पपद्वः, पवद्वः	पपझ। पवझः	पपय्। पवयः	पपळ्। पवळ्ः	पपरू। पवरूः
पपभ; पवभ:	पपआ; पवआ:	पपद्धः; पवद्धः	पपञ। पवञः	पपक्ष। पवक्षः	पपक्त। पवक्तः	पपदु। पवदुः
पपमः; पवमः	पपओ; पवओ:	पपद्दः पवद्दः	पपट। पवटः	पपज्ञ। पवज्ञः		पपदू। पवदूः
पपय; पवय:	पपऔ; पवऔ:	पपष्टः, पवष्टः	पपठ। पवठः		पपङ्ग। पवङ्गः पपङ्ग। पवङ्गः	पपदृ। पवदृः
पपर; पवर:	पपऋ; पवऋ:	पपष्टुः, पवष्टुः	पपड पवडः	पपअ। पवअः		
पपलः, पवलः	पपऋ; पवऋ:	पपष्ठः, पवष्ठः	पपढ। पवढः	पपऄ। पवऄः	पपट्ट पवट्टः गगट्ट गवटः	-
पपळ; पवळ:	पपलः; पवलः	पपष्ठः, पवष्ठः	पपण। पवणः	पपॲ। पवॲः	पपट्ठ। पवट्ठः पपट्ठ। पवट्ठः	पपक! पवक?
पपवः पववः	पपॡ; पवॡ:	पपह्न; पवह्न:	पपत। पवतः	पपइ। पवइः	पपड्ड। पवड्डः	पपख! पवख?
पपशः; पवशः		पपह्न; पवह्न:	पपथ। पवथः	पपई। पवईः		पपग! पवग?
पपषः; पवषः	पपङ्; पवङ्:	पपह्न; पवह्न:	पपद्। पवदः	पपउ। पवउः	पपड्ड। पवड्डः पपढ्ढ। पवढ्डः	पपघ! पवघ?
पपसः; पवसः	पपछ्; पवछ्र:	पपह्नः; पवह्नः:	पपध। पवधः	पपऊ। पवऊः	पपद्ध। पवद्धः	पपङ! पवङ?
पपहः; पवहः	पपट्र; पवट्र:		पपन। पवनः	पपए। पवएः	पपद्ग पवद्गः	पपच! पवच?
पपक़; पवक़:	पपठ्र; पवठ्र:	पपहु; पवहु:	पपप। पवपः	पपऐ। पवऐः	पपद्व। पवद्वः	पपछ! पवछ?
पपखः; पवखः	पपड्र; पवड्र:	पपहू; पवहू:	पपफ। पवफः	पपऍ। पवऍः	पपद्ध। पवद्धः	पपज! पवज?
पपगः; पवगः:	पपद्र; पवद्र:	पपहः; पवहः:	पपब। पवबः	पपऎ। पवऎः	पपद्व। पवद्वः	पपझ! पवझ?
पपज़; पवज़:	पपद्र; पवद्र:	पपह्ः, पवहः	पपभ। पवभः	पपआ। पवआः	पपद्ध। पवद्धः पपद्ध। पवद्धः	पपञ! पवञ?
	17%, 7%%.				176417464	

पपट! पवट?	पपज्ञ! पवज्ञ?	पपङ्ग! पवङ्ग?	पपदू! पवदू?	पपव-वपव	पपॡ-ॡपव	पपह्न-ह्नपव
पपठ! पवठ?		पपङ्ग! पवङ्ग?	पपदृ! पवदृ?	पपश-शपव		पपह्न-ह्नपव
पपड! पवड?	पपअ! पवअ?	पपटृ! पवटृ?		पपष-षपव	गार सार	पपह्न-ह्नपव
पपढ! पवढ?	पपऄं! पवऄं?	पपट्ट! पवट्ट?	-	पपस-सपव	पपङ्र-ङ्रपव	पपह्न-ह्नपव
पपण! पवण?	पपॲ! पवॲ?	पपठ्ठ! पवठ्ठ?	पपक-कपव	पपह-हपव	पपछ्र-छ्रपव	
पपत! पवत?	पपइ! पवइ?	पपड्ढ! पवड्ढ?	पपख-खपव	पपक़-क़पव	पपट्र-ट्रपव	पपहु–हुपव
पपथ! पवथ?	पपई। पवई?	पपड्ड! पवड्ड?	पपग-गपव	पपख़-ख़पव	पपठ्र-ठ्रपव	पपहूँ-हूपव
पपद्। पवद्?	पपउ! पवउ?	पपढ्ढ! पवढ्ढ?	पपघ-घपव	पपग्र-ग्रपव	पपड्र-ड्रपव	पपह-हपव
पपध! पवध?	पपऊ। पवऊ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपङ-ङपव	पपज़-ज़पव	पपद्र-द्रपव	पपह्र–हृपव
पपन! पवन?	पपए! पवए?	पपद्ग! पवद्ग?	पपच-चपव	पपड़-ड़पव	पपद्र-द्रपव	पपह्र–ह्रुपव
पपप! पवप?	पपऐ! पवऐ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपछ-छपव	पपढ़-ढ़पव	पपऱ्-ऱ्पव	पपहूँ-हूँपव
पपफ! पवफ?	पपऍ! पवऍ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपज-जपव	पपफ़-फ़पव	पपह्र-ह्रपव	पपरु-रुपव
पपब! पवब?	पपऎ! पवऎ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपझ-झपव	पपय़-य़पव	पपळ्–ळ्रपव	पपरू-रूपव
पपभ! पवभ?	पपआ! पवआ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपञ-ञपव	पपक्ष-क्षपव	ma ana	पपदु-दुपव
पपम! पवम?	पपओ! पवओ?	पपद्द! पवद्द?	पपट-टपव	पपज्ञ-ज्ञपव	पपक्त-क्तपव	पपदू-दूपव
पपय! पवय?	पपऔ! पवऔ?	पपष्ट! पवष्ट?	पपठ-ठपव		पपङ्ग-ङ्गपव	पपदृ-दृपव
पपर! पवर?	पपऋ! पवऋ?	पपष्ट्र! पवष्ट्र?	पपड-डपव	पपअ-अपव	पपङ्ग-ङ्गपव	
पपल! पवल?	पपऋ! पवऋ?	पपष्ठ! पवष्ठ?	पपढ-ढपव	पपॐ-अपव	पपट्ट-ट्टपव	-
पपळ! पवळ?	पपलृ! पवलृ?	पपष्ठ्! पवष्ठ्?	पपण-णपव	पपॲ-ॲपव	पपट्ट-हुपव	"कपवपक"
पपव! पवव?	पपॡ! पवॡ?	पपत्न्। पवत्न?	पपत-तपव	पपइ-इपव	पपठु-ठुपव	"खपवपख"
पपश! पवश?		पपह्न! पवह्न?	पपथ-थपव	पपई–ईपव	पपड्ड-ड्डपव	"गपवपग"
पपष्। पवष?	गाएट। गुनुस्	पपह्न! पवह्न?	पपद-दपव	पपउ-उपव	पपडु-डुपव	"घपवपघ"
पपस! पवस?	पपङ्र! पवङ्ग?	पपह्न! पवह्न?	पपध-धपव	पपऊ-ऊपव	पपढु-ढुपव	"ङपवपङ"
पपह! पवह?	पपछ्! पवछ्?		पपन-नपव	पपए-एपव	पपद्ध-द्धपव	"चपवपच"
पपक़! पवक़?	पपट्र! पवट्र?	पपहु! पवहु?	पपप-पपव	पपऐ-ऐपव	पपद्ग-द्गपव	"छपवपछ"
पपख़! पवख़?	पपठ्! पवठ्र?	पपहू! पवहू?	पपफ-फपव	पपऍ-ऍवव	पपद्व-द्वपव	"जपवपज"
पपग़! पवग़?	पपड्र! पवड्र?	पपहृ! पवहृ?	पपब-बपव	पपऎ-ऎपव	पपद्ध-द्भपव	"झपवपझ"
पपज़! पवज़?	पपद्र! पवद्र?	पपहॄ! पवहॄ?	पपभ-भपव	पपआ-आपव	पपद्व-द्वपव	"ञपवपञ"
पपड़! पवड़?	पपद्र! पवद्र?	पपह्रु! पवह्रु?	पपम-मपव	पपओ-ओपव	पपद्ध-द्धपव	"टपवपट"
पपढ़! पवढ़?	पपरू! पवरू?	पपहूँ! पवहूँ?	पपय-यपव	पपऔ-औपव	पपद्-द्दपव	"ठपवपठ"
पपफ़! पवफ़?	पपह्न! पवह्न?	पपरु! पवरु?	पपर-रपव	पपऋ-ऋपव	पपष्ट-ष्टपव	"डपवपड"
पपय़! पवय़?	पपळ्! पवळ्?	पपरू! पवरू?	पपल-लपव	पपऋ-ऋपव	पपष्ट्र–ष्ट्रपव	"ढपवपढ"
पपक्ष! पवक्ष?	गान्स्। गतन्स	पपदु! पवदु?	पपळ-ळपव	पपल-लपव	पपष्ठ-ष्ठपव	"णपवपण"
	पपक्त! पवक्त?				पपष्ठ-ष्ठपव	

"तपवपत"	"इपवपइ"	"इपवपड्ढ"	Num-punct spacing	li Vowel sign - base
"थपवपथ"	"ईपवपई"	"डुपवपड्ड"	गता ₹००० तात	पपकिपपकिंपपर्किपप
"दपवपद"	"उपवपउ"	"ढुपवपढु"	पवप ₹१०१ वपव	
"धपवपध"	"ऊपवपऊ"	"द्धपवपद्ध"	पवप ₹२०१ वपव	पपखिपपखिंपपर्खिपप
"नपवपन"	"एपवपए"	"द्गपवपद्ग"	पवप ₹३०१ वपव	पपगिपपगिंपपर्गिपप
"पपवपप"	"ऐपवपऐ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹४०१ वपव	पपघिपपघिंपपर्घिपप
"फपवपफ"	"ऍपवपऍवव	"द्भपवपद्भ"	पवप ₹५०१ वपव	पपङिपपङिंपपर्ङिपप
"बपवपब"	"ऎपवपऎ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹६०१ वपव	पपचिपपचिंपपर्चिपप
"भपवपभ"	"आपवपआ"	"द्धपवपद्ध"	पवप ₹७०१ वपव	पपछिपपछिंपपर्छिपप
"मपवपम"	"ओपवपओ"	"द्पवपद्"	पवप ₹८०१ वपव	पपजिपपजिंपपर्जिपप
"यपवपय"	"औपवपऔ"	"ष्टपवपष्ट"	पवप ₹९०१ वपव	
"रपवपर"	"ऋपवपऋ"	"ष्ट्रपवपष्ट्र"	000 000 000	पपझिपपझिंपपर्झिपप
"लपवपल"	"ऋपवपऋ"	"ष्ठपवपष्ठ"	000,080,088	पपञिपपञिंपपर्ञिपप
"ळपवपळ"	"ल्पवपल्"	"ष्ठपवपष्ठ"	008,080,888	पपटिपपटिंपपर्टिपप
"वपवपव"	"ॡपवपॡ"	"ह्नपवपह्न"	007,080,788	पपठिपपठिंपपर्विपप
"शपवपश"		"ह्नपवपह्न"	003,080,388	पपडिपपडिंपपर्डिपप
"षपवपष"	"ङ्पवपङ्र"	"ह्नपवपह्न"	00%,080,888	पपढिपपढिंपपर्ढिपप
"सपवपस"	"छ्रपवपछ्र"	"ह्नपवपह्न"	004,080,488	पपणिपपणिंपपर्णिपप
"हपवपह"	"ट्रपवपट्र"		006,080,688	पपतिपपतिंपपर्तिपप
"क्रपवपक़"	"ठ्रपवपठ्र"	"हुपवपहु"	006,080,688	
"ख़पवपख़"	"ड्रपवपड्र"	"हूपवपहू"	00८,0१0,८११	पपथिपपथिंपपर्थिपप
"गपवपग्ग"	"द्रपवपद्र"	"ह्पवपह्र"	009,080,988	पपदिपपदिंपपर्दिपप
"जपवपज़"	"द्रपवपद्र"	"हृपवपहृ"	0000000000	पपधिपपधिंपपर्धिपप
"ड़पवपड़"	"ऱ्पवपऱ्"	"हुपवपहु"	000.080.088	पपनिपपनिंपपर्निपप
"ढ्पवपढ्"	"ह्रपवपह्र"	"हूपवपहू"	002,020,222	पपपिपपपिंपपर्पिपप
"फ़पवपफ़"	"ळ्पवपळ्"	"रुपवपरु"	007.080.788	पपफिपपफिंपपर्फिपप
"यपवपय"		"रूपवपरू"	003.080.388	पपबिपपबिंपपर्बिपप
"क्षपवपक्ष"	"क्तपवपक्त"	"दुपवपदु"	00%,0%0,%%%	पपभिपपभिंपपर्भिपप
"ज्ञपवपज्ञ"	"ङ्गपवपङ्ग"	"दूपवपदू"	004.080.488	
	"ङ्गपवपङ्ग"	"दृपवपदृ"	006.080.688	पपमिपपमिंपपर्मिपप
"अपवपअ"	"ट्रपवपट्ट"		006.080.688	पपयिपपयिंपपर्यिपप
"ऄपवपऄ"	"द्रपवपट्ठ"		000.080.088	पपरिपपरिंपपरिंपप
"ॲपवपॲ"	"हुपवपहु"		009.090.999	पपलिपपलिंपपर्लिपप

पपळिपपळिंपपळिंपप पपविपपविंपपर्विपप पपशिपपशिंपपर्शिपप पपषिपपषिंपपर्षिपप पपसिपपसिंपपर्सिपप पपहिपपहिंपपर्हिपप पपक्षिपपक्षिंपपर्सिपप पपक्षिपपक्षिंपपर्सिपप पपज्ञिपपज्ञिंपपर्ज्ञिपप

Ii Vowel sign clusters	पपर्क्हिपप	पपख्र्यिपप	पपर्घ्तिपप	पपर्च्छिपप	पपर्ज्रिपप	पपर्व्रिपप	पपर्लिपप
पपक्किंपप	पपर्क्ळिपप	पपर्ग्किपप	पपर्घ्दिपप	पपर्च्डिपप	पपर्ज्लिपप	पपर्वठ्यपप	पपर्त्यिपप
पपिक्खिपप	पपक्किर्यपप	पपर्गिपप	पपर्घ्निपप	पपर्च्छिपप	पपर्ज्विपप	पपर्ड्डिपप	पपर्त्रिपप
पपर्क्षिपप	पपर्क्त्रिपप	पपर्ग्जिपप	पपर्घ्बिपप	पपच्चिपप	पपर्झ्किपप	पपर्ड्डिपप	पपर्त्लिपप
पपर्क्चिपप	पपक्त्यिपप	पपग्णिपप	पपर्घ्मिपप	पपर्च्तिपप	पपर्झिपप	पपर्ड्रिपप	पपर्त्विपप
पपक्छिपप	पपक्त्विपप	पपर्ग्तिपप	पपर्घ्यिपप	पपर्च्धिपप	पपर्झ्यिपप	पपर्ड्डियपप	पपर्त्सिपप
पपक्जिंपप	पपिक्र्यिपप	पपर्ग्दिपप	पपर्घ्रिपप	पपर्च्दिपप	पपर्झिपप	पपर्ढ्विपप	पपत्क्यिपप
	पपक्स्टिपप	पपर्ग्धिपप	पपर्घ्लिपप	पपर्च्धिपप	पपर्झ्तिपप	पपर्ट्वीपप	पपर्क्रिपप
पपिक्झिपप	पपक्स्डिपप	पपर्ग्निपप	पपर्घ्विपप	पपर्च्निपप	पपर्झ्निपप	पपर्द्रिपप	पपर्त्क्षिपप
पपर्क्टिपप	पपक्स्तिपप	पपर्ग्बिपप	पपर्घ्सिपप	पपर्च्यिपप	पपर्झ्यिपप	पपर्ढ्यिपप	पपत्र्खिपप
पपर्क्तिपप	पपक्स्पंपप	पपर्ग्भिपप	पपघ्ल्यपप	पपर्च्रिपप	पपर्झिपप	पपर्व्द्यिपप	पपर्त्ख्रिपप
पपर्क्डिपप	पपक्स्प्रिपप	पपर्ग्मिपप	पपङ्किपप	पपर्च्लिपप	पपर्झ्लिपप	पपर्ण्टिपप	पपर्त्ख्रिपप
पपर्क्टिपप	पपर्क्यिपप	पपर्ग्यिपप	पपङ्र्नीपप	पपर्च्विपप	पपर्झ्विपप	पपण्टीपप	पपिर्न्यिपप
पपिक्णिपप	पपिकस्प्रतिपप	पपर्ग्रिपप	पपङ्खिंपप	पपर्च्सिपप	पपर्झ्मिपप	पपर्ण्ठिपप	पपर्त्प्रिपप
पपर्क्तिपप	पपर्ख्खिपप	पपर्ग्लिपप	पपङ्खींपप	पपर्च्मिपप	पपर्ञ्चिपप	पपण्डिपप	पपर्त्प्लिपप
पपर्क्थिपप	पपर्ख्टिपप	पपर्ग्विपप	पपर्ङ्गिपप	पपर्च्मिपप	पपञ्जिपप	पपण्ढिपप	पपित्म्यिपप
पपर्क्टिपप	पपर्ख्विपप	पपर्ग्सिपप	पपर्झीपप	पपच्चिंपप	पपञ्शिपप	पपर्णिपप	पपित्स्र्नेपप
पपर्क्निपप	पपर्ख्णिपप	पपग्ध्यिपप	पपङ्घिपप	पपिर्छ्यिपप	पपञ्चिपप	पपर्ण्तिपप	पपित्स्यिपप
पपर्क्यिपप पपर्क्यिपप	पपर्ख्तिपप	पपग्ध्विपप	पपङ्घींपप	पपर्छ्रिपप	पपञ्ज्यंपप	पपर्ण्यिपप	पपित्स्विपप
	पपर्ख्दिपप	पपग्न्यिपप	पपङ्चिपप	पपछिर्वपप	पपर्ट्टिपप	पपर्ण्रिपप	पपित्स्र्यपप
पपर्क्बिपप	पपर्ख्निपप	पपग्भ्यिपप	पपर्ङ्क्षपप	पपर्ज्किपप	पपट्टीपप	पपर्ण्विपप	पपर्थ्किपप
पपर्क्षिपप	पपर्खिपप	पपर्ग्रिपप	पपङ्क्रीपप	पपर्ज्जिपप	पपर्हिपप	पपर्त्किपप	पपर्थ्यपप
पपर्क्मिपप	पपर्ख्मिपप	पपग्म्यिपप	पपङ्क्रिपप	पपर्ज्झिपप	पपर्हीपप	पपर्त्खिपप	पपर्थ्मिपप
पपर्क्यिपप	पपर्ख्यिपप	पपग्ल्यिपप	पपर्ड्मिपप	पपर्ज्ञिपप	पपर्ट्यिपप	पपर्त्तिपप	पपर्थ्यिपप
पपर्क्रिपप	पपर्ख्रिपप	पपर्ध्यिपप	पपर्ङ्यिपप	पपर्ज्तिपप	पपर्ट्रिपप	पपर्ल्थिपप	पपर्श्रिपप
पपर्क्लिपप	पपर्ख्लिपप	पपर्घ्जिपप	पपर्ङ्रिपप	पपर्ज्दिपप	पपर्ट्रीपप	पपर्लिपप	पपर्ध्लिपप
पपर्क्विपप	पपर्ख्विपप	पपर्घ्टिपप	पपर्च्किपप	पपर्ज्निपप	पपर्ट्विपप	पपर्त्पिपप	पपर्थ्विपप
पपिक्शिपप	पपर्ख्शिपप	पपर्घ्विपप	पपर्च्खिपप	पपर्ज्बिपप	पपट्वींपप	पपर्त्फिपप	पपर्ध्सिपप
पपर्क्षिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्डिपप	पपर्च्चिपप	पपर्ज्मिपप	पपर्हिपप	पपर्त्बिपप	पपर्द्गिपप
पपर्क्सिपप	पपिर्ख्यपप	पपिर्घ्णिपप	पपच्टिपप	पपर्ज्यिपप	पपर्डीपप	पपर्सिपप	पपर्द्धिपप

पपर्ह्मिपप

पपर्हिपप पपर्ह्निपप पपर्ह्निपप

पपर्ह्विपप पपळ्यिपप पपळ्पिपप पपळ्विपप पपर्स्यिपप पपर्स्मिपप पपर्स्विपप

पपर्दिपप	पपर्न्थिपप	पपर्म्धिपप	पपर्फ्तिपप	पपर्म्प्रिपप	पपर्ल्मिपप	पपस्टिंपप
पपर्द्धिपप	पपर्न्दिपप	पपर्न्प्रिपप	पपर्प्दिपप	पपम्ब्यिपप	पपर्ल्यिपप	पपस्ठिपप
पपर्द्धिपप	पपर्न्धिपप	पपन्स्म्यपप	पपर्फ्निपप	पपर्म्ब्रिपप	पपर्ल्रिपप	पपर्स्डिपप
पपर्द्भिपप	पपर्न्निपप	पपर्प्किपप	पपर्फिपप	पपम्भिर्यपप	पपर्ल्विपप	पपर्स्हिपप
पपर्द्मिपप	पपर्न्यिपप	पपर्झिपप	पपर्म्मिपप	पपर्म्भिपप	पपर्ल्सिपप	पपर्स्तिपप
पपर्धिपप	पपर्न्भिपप	पपर्प्टिपप	पपर्प्यिपप	पपम्भिर्वेपप	पपर्ल्हिपप	पपर्स्थिपप
पपर्द्रिपप	पपर्न्बिपप	पपर्प्लिपप	पपर्फ्रिपप	पपर्य्यिपप	पपल्र्यिपप	पपर्स्दिपप
पपर्द्विपप	पपर्मिपप	पपर्प्टीपप	पपर्फ्लिपप	पपर्य्रिपप	पपर्ल्ह्यिपप	पपर्स्निपप
पपर्द्ध्यिपप	पपर्म्मिपप	पपर्प्डिपप	पपफ्शिपप	पपर्लिपप	पपल्किर्यपप	पपर्स्पिपप
पपद्र्व्रिपप	पपर्न्यिपप	पपर्प्हिपप	पपर्भिनपप	पपर्व्यिपप	पपल्थ्यिपप	पपर्स्फिपप
पपर्दियिपप	पपर्न्निपप	पपर्णिपप	पपर्भ्यपप	पपर्व्रिपप	पपर्ल्द्रिपप	पपर्स्बिपप
पपर्ध्किपप	पपर्न्लिपप	पपर्प्तिपप	पपर्भिपप	पपर्व्लिपप	पपर्श्किपप	पपस्मिपप
पपर्ध्विपप	पपर्न्विपप	पपर्ष्यिपप	पपर्भ्लिपप	पपर्व्सिपप	पपश्खिपप	पपर्स्यिपप
पपर्ध्निपप	पपर्म्सिपप	पपर्प्दिपप	पपर्भ्विपप	पपर्व्हिपप	पपर्श्चिपप	पपर्स्रिपप
पपर्ध्यिपप	पपर्न्हिपप	पपर्ष्यिपप	पपर्भ्यिपप	पपर्ल्किपप	पपश्छिपप	पपस्लिपप
पपर्ध्रिपप	पपन्भिर्यपप	पपर्प्निपप	पपर्म्तिपप	पपर्ल्खिपप	पपर्श्टिपप	पपर्स्विपप
पपर्ध्लिपप	पपन्भिर्वेपप	पपर्प्पिपप	पपर्म्दिपप	पपर्ल्गिपप	पपर्श्तिपप	पपर्स्सिपप
पपर्ध्विपप	पपन्म्यिपप	पपर्प्भिपप	पपर्म्निपप	पपर्ल्चिपप	पपर्श्रिपप	पपस्मियपप
पपर्ध्सिपप	पपन्स्टिपप	पपर्मिपप	पपर्म्पिपप	पपर्ल्जिपप	पपर्श्बिपप	पपर्स्क्रिपप
पपर्न्किपप	पपन्स्यिपप	पपर्प्यिपप	पपर्म्बिपप	पपर्ल्टिपप	पपर्श्मिपप	पपस्त्यंपप
पपर्न्खिपप	पपन्ह्यिपप	पपर्प्रिपप	पपर्म्भिपप	पपर्ल्जिपप	पपर्श्यिपप	पपस्थिपप
पपर्न्चिपप	पपन्ज्यिपप	पपर्प्लिपप	पपर्म्मिपप	पपर्ल्डिपप	पपर्श्रिपप	पपस्मियपप
पपर्न्छिपप	पपन्क्सिपप	पपर्ष्विपप	पपर्म्यिपप	पपर्ल्हिपप	पपर्श्लिपप	पपस्त्विपप
पपर्न्जिपप	पपन्त्र्यपप	पपर्ष्मिपप	पपर्म्रिपप	पपर्ल्तिपप	पपर्श्विपप	पपर्स्प्रिपप
पपन्झिपप	पपन्त्सिपप	पपर्सिपप	पपर्म्लिपप	पपर्ल्थिपप	पपश्शिपप	पपस्न्यिपप
पपर्न्टिपप	पपन्थ्यिपप	पपर्प्ळिपप	पपर्म्विपप	पपर्ल्दिपप	पपर्श्चिपप	पपर्ह्लिपप
पपर्न्ठिपप	पपन्थ्विपप	पपप्त्यिपप	पपम्शिपप	पपर्ल्पिपप	पपर्स्किपप	पपर्ह्तिपप
पपर्न्डिपप	पपर्न्द्रिपप	पपफ्रिंपप	पपर्म्सिपप	पपर्ल्फिपप	पपस्खिपप	पपर्ह्यिपप
पपर्न्हिपप	पपर्न्ह्रिपप	पपर्फ्जिपप	पपर्म्हिपप	पपर्ल्बिपप	पपस्छिपप	पपर्ह्मिपप
पपर्न्तिपप	पपन्ध्यिपप	पपर्फ्टिपप	पपम्म्यिपप	पपर्ल्भिपप	पपस्जिपप	पपर्हम्यिपप

Half-to-base kerns

पपक्कपपक्खपपक्गपपक्घपपक्डपपक्चप पक्छपपक्जपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठपपक्डप पक्टपपक्णपपक्तपपक्थपपक्दपपक्धपपक्नप पक्नपपक्पपपक्फपपक्खपपक्भपपक्मपपक्यप पक्रपपक्सपपक्लपपक्ळपपक्छपपक्वप पक्शपपक्षपपक्सपपक्हपपक्कपपक्खपपक्गप पक्जपपक्डपपक्टपपक्सपपक्सपप

पपःकपपःख्वपपःखापपःख्यपपःख्यप पःख्यपपःख्यपपःख्यपपःख्यपपःख्यप पःख्यपपःख्यपपःख्यपपःख्यपपःख्यप पःख्यपपःख्यपपःख्यपपःख्यपपःख्यप पःख्यपपःख्यपपःख्यपपःख्यपपःख्यप पःख्यपपःख्यपपःख्यपपःख्यपपःख्यप पःख्यपपःख्यपपःख्यपपःख्यपपःख्यप पःख्यपःख्यपपःख्यप

पपग्कपपग्खपपगगपपग्घपपग्डपपग्चप पग्छपपग्जपपग्झपपग्ञपपग्टपपग्ठपपग्डप पग्डपपग्णपपग्तपपग्थपपग्दपपग्धपपग्नप पग्नपपग्पपग्कपपग्छपपग्कपपग्मपपग्यपपग्रप पग्सपपग्हपपग्कपपग्खपपग्गपपग्जपपग्डप पग्दपपग्कपपग्यपप

पपच्कपपच्खपपचापपघ्चपपघ्डपपघ्डप पघ्डपपघ्जपपघ्झपपघ्जपपघ्टपपघ्डप पघ्डपपघ्णपपघ्तपपघ्थपपघ्दपपघ्धपपघ्नप पघ्नपपघ्मपपघ्कपपघ्अपपघ्मपपघ्यप पघ्नपपघ्रपपघ्लपपघ्लपपघ्लपपघ्वप पघ्नपपघ्सपपघ्सपपघ्लपपघ्लपपघ्यप पघ्नपपघ्डपपघ्सपपघ्सपप पपच्कपपच्खपपच्यपपच्छपपच्छपपच्छप पच्छपपच्जपपच्झपपच्ञपपच्टपपच्छप पच्छपपच्णपपच्यपपच्थपपच्यपपच्यप पच्नपपच्यपपच्कपपच्अपपच्यपप पच्चपपच्यपपच्लपपच्ळपपच्यपपच्थाप पच्थपपच्यपपच्लपपच्लपपच्छपपच्यपपच्यप पच्थपपच्यपपच्लपपच्लपपच्छपपच्यपप

पपछकपपछखपपछगपपछघपपछङपपछचप पछछपपछजपपछझपपछञपपछटप पछडपपछढपपछणपपछतपपछथपपछदप पछधपपछनपपछऩपपछपपपछफपपछबप पछभपपछनपपछ्यपपछ्रपपछ्रपपछलप पछळपपछळपपछवपपछशपपछभपपछसप पछहपपछक़पपछखपपछग़पपछजपपछड़प पछढपपछक़पपछखपप

पपज्कपपज्खपपज्गपपञ्चपपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्झपपञ्चपपञ्चप पञ्चपपञ्णपपञ्चपपञ्थपपञ्चपपञ्चप पञ्चपपञ्पपपञ्कपपञ्चपपञ्भपपञ्मपपञ्चप पञ्चपपञ्सपपञ्कपपञ्छपपञ्चपपञ्शप पञ्चपपञ्सपपञ्हपपञ्कपपञ्खपपञ्गपपञ्जप पञ्चपपञ्चपपञ्कपपञ्चप

पपइकपपइखपपइगपपइघपपइङपपइचप पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइडप पइढपपइणपपइतपपइथपपइदपपइधपपइनप पइनपपइमपपइफपपइबपपइभपपइमपपइयप पझपपइसपपइलपपइळपपइळपपइवपपइशप पइषपपइसपपइहपपइकपपइखपपइग्रापपइजप पइडपपइढपपइफ़पपइस्यप पपञ्कपपञ्खपपञ्गपपञ्चपपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्झपपञ्जपपञ्चप पञ्चपपञ्मपपञ्कपपञ्छपपञ्चपपञ्मप पञ्मपपञ्सपपञ्कपपञ्छपपञ्चपपञ्मप पञ्चपपञ्चपपञ्कपपञ्जप पञ्चपपञ्चपपञ्कपपञ्जप पञ्चपपञ्चपपञ्कपपञ्जप

पपट्कपपट्खपपट्गपपट्घपपट्ङपपट्चप पट्छपपट्जपपट्झपपट्ञपपट्टप पट्ढपपट्णपपट्तपपट्थपपट्दपपट्धपपट्नप पट्नपपट्पपपट्फपपट्बपपट्भपपट्मपपट्यप पट्नपपट्रपपट्लपपट्ळपपट्कपपट्वपपट्शप पट्षपपट्सपपट्हपपट्कपपट्खपपट्गपपट्जप पट्डपपट्ढपपट्कपपट्झपप

पपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्घपपठ्ङपपठ्चप पठ्छपपठ्जपपठ्झपपठ्ञपपठ्टपपठ्ठप पठ्ढपपठ्णपपठ्तपपठ्थपपठ्दपपठ्धपपठ्नप पठ्तपपठ्पपपठ्फपपठ्बपपठ्भपपठ्मपपठ्यप पठ्रपपठ्रपपठ्लपपठ्ळपपठ्खपपठ्मपपठ्शप पठ्षपपठ्सपपठ्हपपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्जप पठषपपठ्सपपठ्हपपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्जप पठडपपठढपपठफ़पपठयपप

पपड्कपपड्खपपड्गपपड्घपपड्डपपड्चप पड्छपपड्जपपड्झपपड्ञपपड्टपपड्ठपपड्डूप पड्ढपपड्णपपड्तपपड्थपपड्दपपड्धपपड्नप पड्नपपड्पपपड्फपपड्बपपड्भपपड्मपपड्यप पद्रपपड्रपपड्लपपड्ळपपड्ळपपड्वपपड्शप पड्षपपड्सपपड्हपपड्कपपड्खपपड्गपपड्जप पडडपपडढपपडफ़पपड्खपप

पपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्घपपढ्डपपढ्चप पढ्छपपढ्जपपढ्झपपढ्ञपपढ्टपपढ्ठपपढ्डप पढ्ढपपढ्णपपढ्तपपढ्थपपढ्दपपढ्धपपढ्नप पढ्नपपढ्पपपढ्फपपढ्बपपढ्भपपढ्मपपढ्यप पद्रपपढ्रपपढ्लपपढ्ळपपढ्अपपढ्वपपढ्शप पढ्षपपढ्सपपढ्हपपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्जप पढ्डपपढ्सपपढ्हपपढ्कपपढ्खपपढ्गपपट्जप

पपण्कपपण्खपपणगपपण्घपपणङ्गपपण्चप पण्डपपणजपपण्झपपणञपपण्डप पण्डपपणणपपण्तपपण्थपपण्डपपण्डप पण्नपपणपपपण्कपपण्डपपण्ञपपण्यप पण्रपपण्रपपण्लपपण्डपपण्ञपपण्वपपण्शप पण्षपपण्सपपण्हपपण्कपपण्खपपण्ञप पण्डपपण्डपपण्कपपण्यप

पपत्कपपत्खपपतापपत्यपपत्डपपत्वपपत्छप पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्खपपत्णप पत्तपपत्थपपत्दपपत्धपपत्नपपत्नपपत्पपत्भप पत्बपपत्भपपत्मपपत्यपपत्रपपत्त्रपपत्लपपत्ळप पत्ळपपत्वपपत्शपपत्सपपत्सपपत्हपपत्कपपत्खप पतापपत्जपपत्डपपत्कपपत्सपपत्यपप

पपद्कपपद्खपपद्गपद्झपपद्झपपद्चप पद्छपपद्जपपद्झपपद्ञपपद्टपपद्ठप पद्डपपद्ढपपद्णपपद्तपपद्थपपद्दप पद्नपपद्नपपद्पपपद्फपपद्कपपद्दप पद्मपपद्नपपद्रपपद्कपपद्ळपपद्दप पद्शपपद्षपपद्सपपद्हपपद्कपपद्खप पद्गपपद्जपपद्झपपद्कपपद्खप

पपध्कपपध्खपपधापपध्यपपख्यपध्यप पध्छपपध्जपपध्झपपध्नपपध्टपपध्ठपपद्धप पद्धपपध्णपपध्तपपध्यपपध्टपपध्यपप्नप पद्मपपध्मपपध्मपपध्वपपध्मपपध्यप पप्नपप्सपपद्मपपद्धपपध्यपप्रापपद्मप पष्मपपध्सपपद्मपपद्मपप्रापप

पपन्कपपन्खपपनापपन्घपपन्डपपन्चपपन्छप पन्जपपन्झपपन्ञपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्दप पन्णपपन्तपपन्थपपन्दपपन्धपपन्नपपन्नपपन्यप पन्कपपन्खपपन्भपपन्मपपन्यपपन्नपपन्तपपन्कप पन्ळपपन्ळपपन्वपपन्शपपन्सपपन्सपपन्हपपन्कप पन्खपपनापपन्जपपन्डपपन्दपपन्कपपन्यपप

पपत्कपपत्खपपत्गपपत्घपपत्ङपपत्चपपत्छप पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्दप पत्गपपत्तपपत्थपपत्दपपत्धपपत्नपपत्तपपत्य पपत्कपपत्खपपत्भपपत्मपपत्यपप्रतपपत्रपपत्लप पत्ळपपत्ळपपत्वपपत्शपपत्सपपत्सपपत्हपपत्कप पत्खपपतापपत्जपपत्डपपत्कपपत्कपपत्सपप

पपम्कपपपस्वपपम्गापपस्वपपम्झपपम्झप पम्छपपम्जपपम्झपपम्ञपपम्टपपम्ठपपम्झप पम्हपपम्णपपम्तपपम्थपपम्दपपम्धपपम्नप पम्नपपम्पपपम्भपपम्बपपम्भपपम्मपपम्यप प्रभपपम्सपपम्लपपम्ळपपम्छपपम्वपपम्शप पप्भपपम्सपपम्हपपम्कपपम्खपपम्गपपम्जप पप्भपपम्हपपम्कपपम्सपप

पपभ्कपपभ्खपपभापपभ्यपपभ्डपपभ्वपपभ्छप पभ्जपपभ्झपपभ्कपपभ्रवपपभ्यपपभ्रप पभ्यपपभ्रपपभ्कपपभ्रवपभ्यपपभ्यपपभ्रप पभ्यपपभ्रपपभ्कपपभ्रवपभ्यपपभ्यपपभ्रप पभ्यपपभ्रपपभ्कपपभ्रवपपभ्यपपभ्रप पभ्यपपभ्रपपभ्रपपभ्रवपपभ्यपपभ्रप पभ्यपभ्रपपभ्रप

पपम्कपपम्खपपमापपम्घपपम्झपपम्झपपम्छप पम्जपपम्झपपम्अपपम्दपपम्धपपम्नपपम्नपपम्यप पम्भपपम्बपपम्भपपम्मपपम्यपपम्भपपम्लप पम्कपपम्खपपम्भपपम्भपपम्शपपम्सपपम्हप पम्कपपम्खपपमापप्जपपम्झपपम्हपपम्भप पम्भपप

पपर्कपपर्खपपर्गपपर्घपपर्डपपर्चपपर्छपपर्जप पर्झपपर्ञपपर्टपपर्ठपपर्डपपर्द्वपपर्णपपर्तपपर्थप पर्दपपर्धपपर्नपपर्नपपर्पपपर्फपपर्बपपर्भपपर्मप पर्यपपर्रपपर्रपपर्लपपर्ळपपर्ळपपर्वपपर्शप पर्षपपर्सपपर्हपपर्क्रपपर्खपपर्गपपर्जपपर्ड्पपर्द्वप पर्फपपर्यपप

पपन्कपपन्खपपनापपञ्चपपन्डपपन्वपपन्छप पन्जपपन्झपपन्अपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्छप पन्तपपश्चपपन्दपपश्चपपन्नपपन्नपपन्मप पन्जपभाषान्मपपन्यपपरूपपन्तपपन्छप पन्छपपन्वपपश्चपपन्सपपन्हपपन्कपपन्खप पनापपन्जपपन्डपपन्डपपन्कपपन्यपप पपल्कपपल्खपपलापपत्थपपल्डपपल्चपपल्छप पल्जपपल्झपपल्जपपल्टपपल्ठपपल्डपपल्डप पल्णपपल्तपपल्थपपल्दपपल्धपपल्नपपल्नप पल्पपपल्कपपल्खपपल्भपपल्मपपल्यपपल्लप पल्सपपल्लपपल्ळपपल्खपपल्शपपल्अप पल्सपपल्हपपल्कपपल्खपपल्जपपल्जपपल्डप पल्सपपल्हपपल्कपपल्खपपलापपल्जपपल्डप

पपळकपपळखपपळगपपळघपपळडपपळचप पळछपपळजपपळझपपळअपपळटपपळठप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळधपपळनपपळनपपळपपपळभपपळबप पळभपपळनपपळयपपळ्पपळसपपळलपपळळप पळळपपळवपपळशपपळझपपळझप पळकपपळखपपळग्रपपळापपळडप पळकपपळखपपळग्रपप

पपळकपपळखपपळगपपळघपपळङपपळचप पळछपपळजपपळझपपळञपपळटप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळधपपळनपपळनपपळपपपळभपपळबप पळभपपळनपपळयपपळ्पपळऱपपळलप पळळपपळळपपळवपपळशपपळषपपळसप पळहपपळकपपळखपपळापपळजपपळडप पळहपपळकपपळखपपळ

पपश्कपपश्खपपश्गपपश्चपपश्डपपश्चपपश्चप पश्जपपश्झपपश्जपपश्टपपश्चपपश्डपपश्चप पश्णपपश्तपपश्थपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पश्पपपश्कपपश्चपपश्मपपश्यपपश्चप पश्रपपश्लपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पश्सपपश्हपपश्कपपश्खपपश्गपपश्जपपश्डप पश्चपपश्कपपश्चपप

तस्त्रततस्त्रीततस्त्रोततस्तेततस्तेततस्तेततस्तेततस्त्रोततस्त्रोततस्त्रोततस्त्रोततस्त्रोततस्त्रोततस्त्रोततस्त्र तस्यततस्त्रोततस्त्रोततस्त्रोततस्त्रोततस्त्रोततस्त्रोततस्त्रोततस्त्रोततस्त्रोततस्त्रोततस्त्रोततस्त्रोतस्त्रम्तस्त्रोतस्त्रम्

पपस्कपपस्खपपस्गपपस्घपपस्डपपस्चप पस्छपपस्जपपस्झपपस्ञपपस्टपपस्ठपपस्डप पस्तपपस्पपपस्कपपस्बपपस्भपपस्मपपस्यप पस्नपपस्पपपस्कपपस्ळपपस्वपपस्शप पस्मपपस्सपपस्हपपस्कपपस्खपपस्गप पस्मपपस्हपपस्कपपस्खपपस्खपपस्जप पस्डपपस्हपपस्कपपस्यपप

पपह्कपपह्खपपद्मापपह्घपपह्डपपह्चपपह्छप पहजपपह्झपपह्ञपपहटपपह्ठपपहडपपह्डप पह्चपपह्सपपट्थपपह्दपपद्धपपह्मपपट्मप पट्मपपह्बपपट्भपपत्मपपह्मपपह्मपपह्मप पट्कपपह्खपपह्मपपह्मपपट्मपपट्सपपट्हप पट्कपपट्खपपट्मपपह्जपपट्डपपह्डप पट्मपपट्यपप

less common half-forms

पपक्ष्कपपक्ष्यपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्षमप

पपइकपपइखपपइगपपइचपपइडपपइचप पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइडप पइढपपइणपपइतपपइथपपइदपपइधपपइनपपइपप पइफपपइबपपइभपपइमपप पपइयपपइलपपइळप पइपपवपपइशपप पपइषपपइसपपइसपप

पपरक्रपपरख्रपपरग्रपपरग्रपपरक्रपपरख्रपपरख्रप परज्ञपपरक्षपपरञ्जपपरद्रपपरठपपरद्रपपरद्रप परग्रपपरक्षपपरथ्रपपरद्रपपरभ्रपपरञ्जप परक्रपपरख्रपपरभ्रपपर्मपप पपर्यपपर्स्मप परळपपरभ्रपपरश्रपप पपरश्रपपरस्मपपरस्मप

 पपक्रकपपक्रखपपक्रगपपक्रघपपक्रचप पक्रछपपक्रजपपक्रझपपक्रञपपक्रटपपक्रठप पक्रडपपक्रखपपक्रणपपक्रतपपक्रथपपक्रदप पक्रधपपक्रनपपक्रपपपक्रभपपक्रभप पपक्रयपपक्रलपपक्रअपपक्रपपवपपक्रशप पपक्रथपपक्रसपपक्रहपप

पप्रक्रपप्रखपप्रगपप्रयपप्रस्पप्रसपप्रखप प्रजपप्रसपप्रजपप्रसपप्रसपप्रसप प्रणपप्रतपप्रथपप्रसपप्रभपप्रमप प्रक्रपप्रखपप्रभपप्रमपप्रपप्रसपप्रसप प्रमपवपप्रशपप पप्रसपप्रसपप्रसपप

पपप्रक्रपपप्रखपपप्रापपप्रयपप्रसपप

पपच्कपपच्खपपच्चापपच्चपपच्छपपच्छपपच्छप पच्जपपच्झपपच्ञपपच्टपपच्छपपच्छपपच्छप पच्चापपच्चपपच्थपपच्दपपच्धपपच्नपपच्मप पच्मपपच्खपपच्भपपच्मपपच्यपपच्लपपच्ळप पच्मपवपपच्थापपच्यपपच्लपप पपज्रमपज्रखपपजापपज्रमपपज्रपपज्रपपज्रप पज्रापपज्रापपज्रपपज्रपपज्रपपज्रप पज्रापपज्रापपज्रपपज्रपपज्रप पज्रमपपज्रपपज्रमपपज्रपपज्रप पज्रपपज्रपपव्रपपज्रापपज्रपपज्रपप

पपइक्तपपइख्रपपइग्रापपइघ्रपपइङ्घपपइच्चप पइरुपपइज्जपपइझपपइञ्जपपइटपपइठपपइडप पइद्धपपइग्गपपइतपपइश्रपपइद्यपपइध्रपपइनप पइम्रपपइफ्रपपइबपपइश्रपपइमपप पपइस्यप पइल्लपपइळपपइमपवपपइश्रापपइष्ठपपइसप पइल्लपप

पपञ्रमपञ्चपपञ्रापपञ्चपपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्चापपञ्जपपञ्छप पञ्छपपञ्जपपञ्चापपञ्जपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्चपपञ्चपप पञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्चपपञ्चप पञ्जपप

पपण्कपपण्खपपणापपण्घपपण्डपपण्चपपण्छप पण्जपपण्झपपण्जपपण्टपपण्ठपपण्डपपण्डप पण्णपपण्जपपण्थपपण्दपपण्धपपण्जपपण्पप पण्जपपण्जपपण्भपपण्जपप पपण्यपपण्जप पण्ळपपण्णपवपपण्शपप पपण्जपपण्लपप

पपश्कपपश्खपपश्रापपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पश्जपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पश्णपपश्चपपश्थपपश्चपपश्चपपश्मप पश्मपपश्चपपश्भपपश्मपप पपश्यपपश्चप पश्चपपश्मपवपपश्शपप पपश्चपपश्चपपश्चपप

पप्रक्रपप्रख्रपप्रापप्रध्यपप्रह्रपप्रच्रपप्रख्रप प्रज्ञपप्रद्वापप्रञ्जपप्रद्रपप्रद्रपप्रह्रपप्रद्रप प्रण्णपप्रतपप्रथ्रपप्रद्रपप्रध्रपप्रमप् प्रक्रपप्रब्रपप्रभपप्रमपप पप्रयपप्रलप प्रद्र्यपप्रप्रप्वपप्रशपप पप्रष्रपप्रसप्पर्रह्रपप

पपप्रकपपप्रखपपप्रगपपप्रघपपप्रङपपप्रचप पप्रछपपप्रजपपप्रझपपप्रञपपप्रटपपप्रठप पप्रडपपप्रदपपप्रणपपप्रतपपप्रथपपप्रदपपप्रधप पप्रनपपप्रपपप्रफपपप्रबपपप्रभपपप्रमपप पपप्रयपपप्रलपपप्रळपपप्रपपवपपप्रशपप पपप्रयपपप्रसपपप्रहपप